© M. K. Pandey

।। जन्म पत्रिका ।।

Jyotish and Research

"भ्रम से दूर केवल ज्योतिष"



।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

नाम : सौरभ शर्मा

स्थान : गुना (मध्य प्रदेश)

दिनांक : 01 सितंबर 1985

जन्म विवरण

नाम	सौरभ शर्मा
दिनांक	01/09/1985
समय	01 : 29 रात
स्थान	गुना (मध्य प्रदेश)
लिंग	पुरुष
अयनांश	लाहिरी (023°39'22")
डी एस टी	0
मंगल दोष	नही
राशि	मीन
आयू	36 व 6 मा 21 दि
दशा भोग्य	गु 2 व 4 मा 17 दि

दैनिक पंचांग

पक्ष	कृष्ण
तिथि	द्वितीया
नक्षत्र(च)	पूर्वाभाद्रपद (4)
हिन्दू दिन	शनिवार
अंग्रेजी दिन	रविवार
योग	धृति
करण	तैतिल
सूर्य उदय	06-01-42
सूर्य अस्त	18-39-51

व्यक्ति विवरण

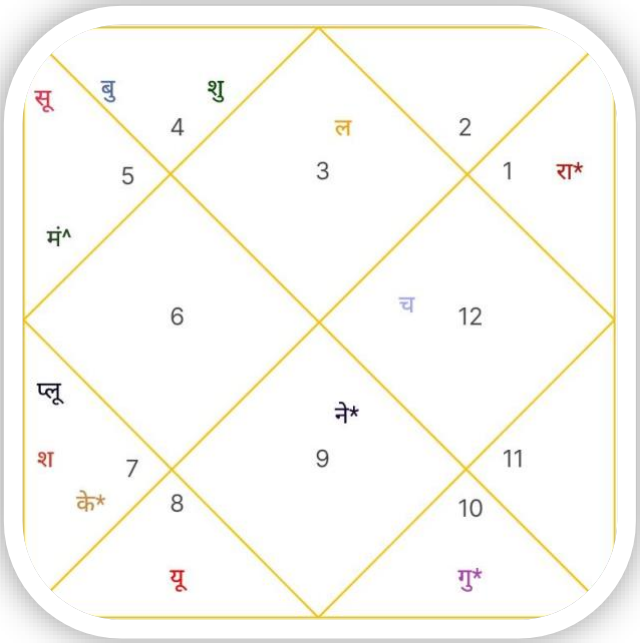
लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	01/09/1985
जन्म समय	01:29 रात
इष्ट काल	048-38-15
जन्म स्थान	माजरा
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	24 : 38 : N
रेखांश	77 : 19 : E
स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 44
युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
स्थानीय औसत समय	01 : 08 : 15
जन्म समय - जी एम टी	19 : 59 : 00
तिथि	द्वितीया
हिंदु दिन	शनिवार
पक्ष	कृष्ण
करण	धृति
सूर्योदय	06 : 01 : 42
सूर्यास्त	18 : 39 : 51
दिन अविधि	12 : 38 : 08

ग्रह स्थिति

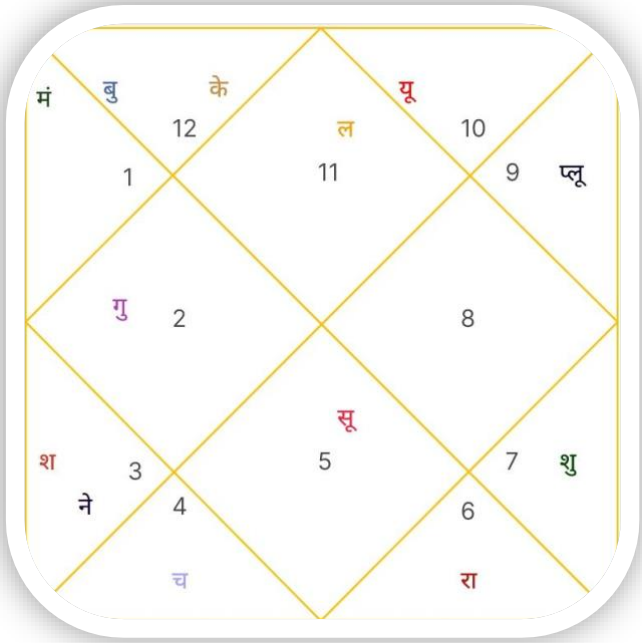
ग्रह	राशी	अंश	नक्षत्र	पद
लग्न	मिथुन	14°00’27”	आद्रा	(3)
सुर्य	सिंह	14°41’50”	पु0फाल्गुनी	(1)
चंद्र	मीन	01°20’55”	पूर्वाभाद्रपद	(4)
मंगल (अ)	सिंह	00°29’35”	मघा	(1)
बुध (व)	कर्क	27°02’42”	आश्लेषा	(4)
गुरु (व)	मकर	15°09’46”	श्रवण	(2)
शुक्र	कर्क	10°43’40”	पुष्य	(3)
शनि	तुला	28^{0}54’56”	विशाखा	(3)
राहु (व)	मेष	18°37’57”	भरणी	(2)
केतु (व)	तुला	18°37’57”	स्वाति	(4)
यूरेनस (व)	वृश्चिक	20°22’30”	ज्येष्ठा	(2)
नेप (व)	धनु	7°11’03”	मूल	(3)
प्लूटो	तुला	08°57’12”	स्वाति	(1)

विष्णोत्तरी अंतर्दशा

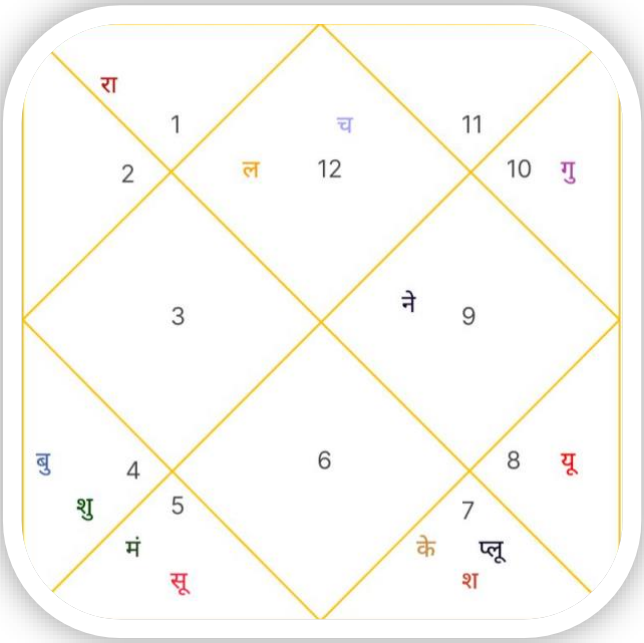
गु/गु	18/01/1988
गु/श	01/12/2027
गु/बु	08/03/2030
गु/के	14/02/2031
गु/शु	14/10/2033
गु/सू	01/08/2034
गु/च	01/12/2035
गु/मं	08/11/2036
गु/रा	01/04/2039



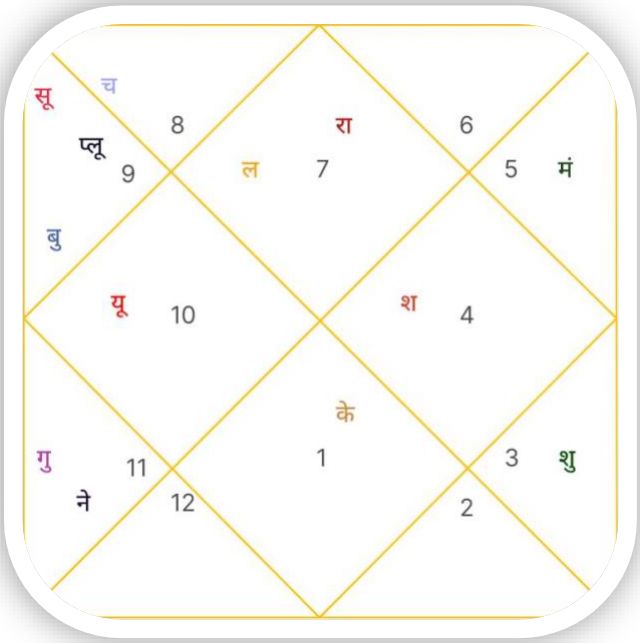
लग्न कुंडली



नवमांश कुंडली



चंद्र कुंडली।



दशमांश कुंडली

प्रत्येक मनुष्य का जन्म किसी ना किसी उद्देश्य के लिए होता है, वर्तमान जन्म में प्रत्येक मनुष्य अपने प्रारब्ध अनुसार समस्त भोगों को भोगते हुए सत्य के मार्ग की खोज ही प्रत्येक मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है, और इस अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु ही बार-बार हमें जन्म लेना होता है

आपका भी कोई ना कोई इस जन्म का उद्देश्य है और वह उद्देश्य क्या है यह आपकी आने वाली साढ़ेसाती आप के उद्देश्य की तस्वीर, पूर्णता स्पष्ट तो नहीं किंतु धुंधले रूप में आपको दिखा देगी, मैं स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का सत्य उसका अपना सत्य होता है, अलग होता है, ग्रहों के द्वारा अर्थात समय ही उसे उसका सत्य बता सकता है दिखा सकता है,

लग्नेश बुध और पंचमेश शुक्र का धन भाव में स्थित होना यह बताता है कि पैसे के प्रति धन के प्रति आपके अंदर बड़ी उत्कट इच्छा मौजूद है, क्योंकि पंचम भाव का संबंध आपके प्रारब्ध सी है आपके पूर्व जन्म के संचित कर्मों से है उन कर्मों के भोग से है और लग्न का संबंध वर्तमान जन्म के शरीर से है जो शरीर भोग भोगने वाला है ।

लग्न लग्नेश : मिथुन राशि का लग्न है लग्न पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है लग्नेश बुध द्वितीय भाव में पंचमेश शुक्र के साथ राजयोग का निर्माण कर रहा है

आपका चेहरा सुंदर एवं आकर्षक होगा, दांत भी सुंदर होंगे, इसके अलावा आप श्रेष्ठ वक्ता भी होंगे अर्थात आपके अंदर विलक्षण वाक शक्ति होगी आपके पास कभी भी धन का अभाव नहीं होगा, आपका स्वभाव हंसमुख एवं विनोदी होगा

लग्नेश बुध पर गुरु की दृष्टि यह भी दर्शाती है कि आप एक धार्मिक व्यक्ति हैं।

द्वितीय द्वितीयेश : द्वितीय स्थान में लग्नेश बुद्ध और पंचमेश शुक्र की स्थिति यह दर्शाती है कि आपमें बोलने की अद्भुत क्षमता है, आप हमेशा लोगों को, श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने में, आकर्षित करने में सफल होंगे, आप धनवान एवं बुद्धिमान भी होंगे, और आपका शब्दकोश विस्तृत होगा, शिक्षा के प्रति, अध्ययन के प्रति आपके मन में आसक्ति होगी और उच्च शिक्षित भी होंगे

बुध चतुर्थेश होकर द्वितीय भाव में स्थित है, चतुर्थ एवं द्वितीय भाव दोनों का संबंध संपत्ति से है, द्वितीय चल संपत्ति का भाव है और चतुर्थ

अचल संपत्ति का भाव है चतुर्थेश बुध का द्वितीय स्थान में जाना यह दर्शाता है कि आपके पास धन वैभव संपत्ति वाहन एवं नौकर भी होंगे

द्वितीय स्थान में शुक्र के फल भी उपरोक्त अनुसार ही होंगे

द्वितीयेश का दशम स्थान में जाना धन का कर्म से संबंध स्थापित करता है यह एक अति उत्तम धन योग माना जाता है, ऐसे जातक को उत्तम व्यवसायिक जीवन प्राप्त होता है, द्वितीयेश का गुरु के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में स्थित होना और मंगल की दृष्टि होना यह दर्शाता है कि व्यक्ति को शासकीय अनुग्रह प्राप्त होगा
चूंकि द्वितीयेश चंद्रमा एक अंश का है एवं इस पर मंगल की दृष्टि है इसलिए ऐसा व्यक्ति हठधर्मी होता है, अहंकारी भी होता है, ऐसा व्यक्ति परिवार का सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है और इसलिए वह तनाव में भी रहता है, इसका एक अर्थ यह भी है की जातक को वसीयत प्राप्त होगी, अर्थात जातक पैतृक संपत्ति का अधिकारी होगा

तृतीय तृतीयेश : तृतीय स्थान में सूर्य और मंगल की स्थिति व्यक्ति को प्रचुर ऊर्जावान बनाती है जीवन की विषमताओं का सामना करने का अद्भुत साहस देती है ऐसा व्यक्ति कुशल खिलाड़ी भी हो सकता है, व्यक्ति के छोटे भाई बहन नहीं होंगे और यदि हैं तो उनसे इसके संबंध

मधुर नहीं होंगे, तृतीय स्थान में स्थित स्व राशि का सूर्य व्यक्ति को उत्तम धन प्रदान करता है, आपको कंधे में चोट लग सकती है, तृतीय स्थान में सूर्य एवं मंगल की स्थिति छोटे भाई बहन माता एवं पिता के लिए अरिष्ट दायक स्थिति है, तृतीयेश सूर्य का अपने ही भाव में स्थित होना व्यक्ति को निजोद्योग से सफलता दर्शाता है

* चतुर्थेश के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है, चतुर्थ भाव पर द्वितीयेश चंद्रमा की दृष्टि, धन संपत्ति के अलावा माता से जातक का प्रेम दर्शाती है

* पंचम पंचमेश : पंचम स्थान में शनि व केतु स्थित है,

- आपके पेट में समस्या हो सकती है, दिमागी समस्या भी हो सकती है
- यह शनि अष्टमेश होकर पंचम स्थान में स्थित है इसलिए आपका रुझान तंत्र मार्ग में हो सकता है
- इसके अलावा अनुसंधान से संबंधित कार्यों की तरफ भी हो सकता है
- यह योग निःसंतानता, का योग है, किंतु चूंकि शनि अपनी उच्च राशि में है और गुरु के नक्षत्र में स्थित है, इसलिए एक संतान हो सकती है
- यह योग संतान के लिए भी समस्या दिखाता है संतान को कोई स्वास्थ्य से संबंधित समस्या जरूर होगी, जो उसकी कुंडली से स्पष्टत: ज्ञात हो सकती है।
- पंचमेश शुक्र के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है ।

षष्ठ षष्ठेश : षष्ठेश मंगल का तृतीय भाव में जाकर अस्त हो जाना यह दर्शाता है कि छोटे भाई बहन से उसके संबंध अच्छे नहीं होंगे उसके छोटे भाई बहन रोगी भी हो सकते हैं, जातक को कर्ण रोग हो सकता है

एकादशेष मंगल का तृतीय भाव में जाना यह दर्शाता है कि व्यक्ति कोई व्यापार करेगा और उसे अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा क्योंकि एकादश भाव और तृतीय भाव दोनों उपचय स्थान हैं एक उपचय स्थान के स्वामी का दूसरे उपचय स्थान में स्थित होना निश्चित रूप से उसे धन प्रदान करता है ।

सप्तम सप्तमेश : सप्तमेश गुरु का अष्टम स्थान में जाना और मंगल का तृतीय स्थान में अस्त हो जाना सर्वप्रथम यह बताता है की जातक में कामेच्छा की कमी होगी ।

- सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि और सप्तमेश गुरु का अष्टम स्थान में नीच राशि में स्थित होना यह वैवाहिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है
- दशमेश गुरु का अष्टम स्थान में जाकर नीच हो जाना यह दर्शाता है की व्यक्ति का कार्य गुप्त प्रकृति का हो सकता है, व्यक्ति को अघोषित

संपत्ति, गुप्त धन या नॉन टैक्सेबल इनकम प्राप्त होती है, जातक कुछ ऐसे कार्य भी करता है जिन्हें नैतिक नहीं कहा जा सकता ।

अष्टम अष्टमेष : अष्टम स्थान में गुरु का स्थित होना धन की दृष्टि से अच्छा है, क्योंकि यह गुरु दशमेश होकर द्वादश भाव को दृष्ट करता है अतः व्यक्ति धार्मिक कार्यकलापों में धन व्यय करता है, यह सप्तम दृष्टि से द्वितीय भाव यानी धन भाव को दृष्ट करता है इसलिए यह गुरु व्यक्ति को धन भी प्रदान करता है और वैसे भी गुरु धन का कारक भी है, गुरु नवम दृष्टि से चतुर्थ भाव को दृष्ट करता है, चतुर्थ भाव सुख का भाव है और गुरु सुख का कारक है इसलिए निश्चित रूप से गुरु व्यक्ति को सुखी भी बनाता है

अष्टमेश नवमेश शनि के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है, नवम स्थान पर मंगल की दृष्टि भाग्य में कभी-कभी अवरोध देती है क्योंकि यह मंगल छठे भाव और छठे से छठे भाव का स्वामी है।

दशम दशमेष : दशम भाव में चंद्रमा दिग्बलहीन हो जाता है, यह चंद्रमा 01 अंश का है यानी बहुत ही कमजोर, लेकिन चूंकि यह कृष्ण पक्ष की द्वितीय तिथि का चंद्रमा है, अतः इसे पक्ष बल प्राप्त होता है यह शुभ

चंद्रमा है और शुभ राशि में स्थित है, शुभ भाव में स्थित है इसलिए यह निश्चित ही अच्छे परिणाम देगा नवांश कुंडली में भी यह अपनी कर्क राशि में चला गया है, किंतु 100% परिणाम नहीं दे सकेगा, फिर भी इसकी दशा में संतोषजनक शुभ फल प्राप्त होंगे

चूंकि यह चंद्रमा धन भाव का स्वामी है जो दशम से पंचम भाव है, इसलिए यह चंद्रमा उत्तम व्यवसायिक जीवन प्रदान करता है
दशमेश गुरु के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है ।

एकादश एकादशेश : एकादश भाव में राहु धन व दीर्घायु प्रदान करता है यह राहु भी बता रहा है कि व्यक्ति अल्प संततिवान होगा, व्यक्ति अपने जीवन में अनेकों यात्राएं करेगा और इन यात्राओं का संबंध उसके व्यापार से होगा
एकादशेष मंगल के बारे में ऊपर लिखा जा चुका है ।

द्वादश द्वादशेष : द्वादश भाव पर केवल गुरु की दृष्टि से जिसके बारे में ऊपर लिखा जा चुका है,

द्वादशेष शुक्र का द्वितीय स्थान अर्थात कुटुंब स्थान में स्थित होना और उस पर शनि की दृष्टि होना परिवार में कलह का कारण बन सकता है, पैतृक संपत्ति का अपव्यय हो सकता है ।

इस समय बुध की महादशा चल रही है बुध आपकी कुंडली का लग्नेश एवं चतुर्थेश होकर द्वितीय भाव में पंचमेश के साथ राजयोग का निर्माण कर रहा है, यह बुध नवांश कुंडली में फिर धन भाव में स्थित है इसलिए बुध की महादशा स्वास्थ्य की दृष्टि से और धन की दृष्टि से अच्छी है।

स्वास्थ्य के मामले में आपकी कुंडली अच्छी है, पेट को छोड़कर अन्य कोई रोग आपको नहीं होगा, छोटी मोटी बातें जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि अपनी आंखों का चेकअप करवाते रहें और आपके कंधे या हाथ में चोट लग सकती है इसके अलावा कोई गंभीर बात नहीं है ।

बुध/शनि -09.05.2021 to 18.01.2024 - शनि लग्न कुंडली का अष्टमेष एवं नवमेष होकर पंचम स्थान में उच्च राशि में राहु केतु अक्ष में स्थित है अर्थात पीड़ित है,
यह शनि चंद्र कुंडली एवं दशम भाव से एकादशेष एवं द्वादशेष होकर अष्टम स्थान में स्थित है, शनि की दृष्टि सप्तम, एकादश एवं धन

भाव में स्थित लग्नेश बुध पर भी है जो महादशानाथ है, इसलिए बुध की महादशा में शनि की अंतर्दशा बहुत अच्छा धन नहीं दे पाएगी।

- शनि लग्न कुंडली के पंचम भाव में उच्च राशि में स्थित है और पंचमेश शुक्र को दृष्ट भी करता है
- नवांश कुंडली का लग्नेश होकर पंचम स्थान में स्थित है
- सप्तांश कुंडली का पंचमेश है और अष्टम स्थान में स्थित होकर अपने पंचम भाव को दृष्ट करता है, और संतान कारक गुरु से दृष्ट भी है
- यह शनि संतान कारक गुरु के विशाखा नक्षत्र में स्थित है

इसलिए यह शनि अपनी अंतर्दशा में संतान जरूर प्रदान करेगा, 2023 में आपको इस खुशखबरी की सूचना अवश्य मिलेगी ।

संतान : लग्न कुंडली के पंचम स्थान में उच्च का शनि स्थित है और केतु भी स्थित है, इन दोनो की स्थिति यह दर्शाती है कि संतान होने में कोई न कोई समस्या अवश्य है, क्योंकि शनि लग्न कुंडली का अष्टमेश भी है, और सप्तांश कुंडली का पंचमेश होकर अष्टम भाव में नीच राशि में स्थित है

- लेकिन शनि का उच्च राशि में स्थित होना

- पंचमेश शुक्र का कुटुंब भाव में स्थित होना
- पंचमेश शुक्र और लग्नेश बुध पर संतान कारक गुरु की दृष्टि होना
- लग्न कुंडली के पंचमेश और गुरु से पंचमेश शुक्र का चंद्र से पंचम भाव पर स्थित होना
- संतान कारक गुरु पर शुभ ग्रह शुक्र एवं लग्नेश की दृष्टि होना
- सप्तांश कुंडली का पंचमेश होकर पंचम भाव को दृष्ट करना

यह दर्शाता है कि आपके दो संतान होंगी

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि संतान होने में समस्या जरूर है इसलिए आप दोनों लोगों को 1-1 पाठ प्रतिदिन संतान गोपाल मंत्र का पाठ जरूर करना चाहिए।

वैवाहिक जीवन :

- लग्न कुंडली के सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि है और सप्तमेश गुरु अष्टम भाव में नीच राशि में वक्री स्थिति में है
- चंद्र कुंडली का सप्तम भाव पाप कर्तरी में है
- नवांश कुंडली के सप्तम भाव में सूर्य स्थित है भले ही यह अपनी ही राशि में क्यों ना हो

तीनों कुंडलियों की यह स्थिति बताती है वैवाहिक जीवन में कुछ मत भेद अवश्य हैं, कभी-कभी वाद विवाद की स्थिति बन जाती है किंतु अलगाव के किसी भी तरह के कोई संकेत नहीं है ।

आर्थिक स्थिति :

- धन भाव के स्वामी का दशम स्थान में स्थित होना
- पंचमेश और लग्नेश का धन भाव में राजयोग बनना
- चतुर्थेश और लग्नेश बुध का धन भाव में स्थित होना
- एकादशेष का तृतीय भाव में तृतीयेश के साथ स्थित होना
- तृतीयेश सूर्य का अपनी राशि में वर्गोत्तम होना

ये सब बातें यह दर्शाती हैं कि आपके पास पर्याप्त धन होगा आर्थिक स्थिति सामान्य तौर पर अच्छी होगी, हालांकि इस कुंडली में कोई सशक्त राजयोग नहीं है इसलिए बहुत ज्यादा धन होगा ऐसा भी नहीं है

संतान सुख : पंचम स्थान केतु के द्वारा पीड़ित है, हालांकि नवमेश शनि अपनी मित्र राशि में, उच्च राशि में स्थित है

• पंचमेश शुक्र का लग्नेश के साथ कुटुंब भाव में स्थित होना और फिर गुरु से दृष्ट होना, यह दर्शाता है की संतान परिवार के साथ ही रहेगी अर्थात कुटुंब में ही रहेगी संतान के द्वारा माता-पिता को सुख की प्राप्ति होगी ।

वाहन, मकान : चतुर्थ भाव वाहन और मकान दोनों का है चतुर्थ भाव अचल संपत्ति धन एवं वैभव का भी है ।

• चतुर्थेश बुध का अपने भाव से एकादश भाव में जाना और वह एकादश भाव जो लग्न से धन भाव कहलाता है वहां पर वाहन कारक ऐश्वर्य कारक शुक्र के साथ स्थित होना और उस पर दशमेश गुरु की दृष्टि हो ना यह बता रहा है कि आपके पास वाहन मकान धन व अचल संपत्ति सब कुछ होगा

• धन भाव के स्वामी चंद्रमा का चतुर्थ भाव को देखना भी यही दर्शाता है कि उक्त सभी सुख आपके पास होगा,

• गुरु की दृष्टि भी चतुर्थ भाव और चतुर्थेश लग्नेश बुध और शुक्र पर है।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है कि इस समय बुध की महादशा में शनि की अंतर्दशा चल रही है और यह शनि आपकी कुंडली का बहुत अच्छा ग्रह नहीं है इस की अंतर्दशा में कोई बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं होंगे

18 जनवरी 2024 से केतु की महादशा शुरू होगी जो 18 जनवरी 2031 तक रहेगी ।

केतु की महादशा आपके लिए अच्छी होगी लेकिन केतू में गुरु की अंतर्दशा में आपके वैवाहिक जीवन में कुछ उथल-पुथल होगी अतः आपको सावधान रहना चाहिए वाद-विवाद करने से बचना चाहिए, इसके अलावा आपके नौकरी व्यवसाय में भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा इसका समय होगा 6 जनवरी 2028 से लेकर 12 दिसंबर 2028 तक

इसके बाद शनि की अंतर्दशा आएगी जो 22 जनवरी 2030 तक रहेगी इस दौरान भी वही समस्याएं बनी रहेंगी जो गुरु की अंतर्दशा में होंगी क्योंकि शनि पंचम भाव में स्थित है और सप्तम भाव को दृष्ट करता है लाभ भाव एवं धन भाव को भी दृष्ट करता है।

इसके अलावा पूरी केतु की महादशा आपके लिए बहुत अच्छी सिद्ध होगी

15 जून 2024 से 15 अगस्त 2025 के बीच आप कोई ना कोई वाहन जरूर खरीदेंगे और उस वाहन से तात्पर्य फोर व्हीलर से है ।

2030 में आप के पास अपना मकान भी हो जाएगा।

18 जनवरी 2031 से शुक्र की महादशा का आगाज होगा जैसा कि मैंने ऊपर शुक्र के बारे में लिखा है शुक्र आपका बहुत अच्छा ग्रह है क्योंकि

यह त्रिकोणीय होकर धन भाव में स्थित है और नमाज कुंडली का यह राजयोग कारक ग्रह होकर अपनी तुला राशि नवम भाव में स्थित है और दशमेश मंगल के द्वारा दृष्टि भी है इसलिए शुक्र की महादशा शुरू होते ही संतान और धन के मामले में आपको अच्छे परिणाम देना शुरु कर देगी शुक्र की महादशा में शुरुआत में आने वाली अंतर दर्शाए जैसे सूर्य चंद्र मंगल यह सभी दशाएं अच्छी होंगी शुभ परिणाम देंगी ।

28 अप्रैल 2022 से आप की साढ़ेसाती शुरू हो रही है इस दौरान आप के मन में अपने जीवन के प्रति व्यवसायिक जीवन के प्रति निराशा के भाव आ सकते हैं, तो आपको इस निराशा से उदासीनता से बचने का प्रयास करना चाहिए प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अच्छा और बुरा समय आता ही है अच्छा और बुरा दोनों मिलाकर ही जीवन बनता है अतः आपको सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए,

मिथुन लग्न में शनि अष्टमेश बन जाता है और इसलिए यह शनि बुरे परिणाम देता है किंतु आप का शनि पंचम भाव में स्थित है और मित्र राशि में उच्च राशि में स्थित है इतना ही नहीं यह गुरु के विशाखा नक्षत्र में है और गुरु शनि की राशि में है इसका अर्थ यह है की आपको श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति होगी या आपकी संतान बहुत ही श्रेष्ठ होगी, कहने का तात्पर्य यह है शनि की साढ़ेसाती से आपको घबराने की

आवश्यकता नहीं है यह शनि की साढ़ेसाती आपको कुछ सिखाने के लिए आ रही है, जीवन का कुछ पाठ पढ़ाने आ रही है

नवमेष शनि का पंचम स्थान में स्थित होना यह भी दर्शाता है कि व्यक्ति धर्म मनस्क एवं पूजा व कर्म अनुष्ठान को समर्पित है

शनि अष्टम भाव व नवम भाव का स्वामी होकर पंचम भाव में स्थित है, अष्टम भाव अध्यात्म का भाव है नवम भाव धर्म का भाव है नवम भाव भविष्यत जन्म का भाव भी है और पंचम भाव प्रारब्ध का भाव है पूर्वजन्म का भाव है, तो नवमेश शनि का पंचम स्थान में स्थित होना भविष्य जन्म का पूर्व जन्म के साथ संबंध दर्शाता है इसलिए आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है चिंतन करने की आवश्यकता जरूर है और यह शनि की साढ़ेसाती यही पाठ पढ़ाने आ रही है इन साडे 7 वर्षों में आपकी विचारों में आमूलचूल परिवर्तन होगा, धर्म के प्रति, कि धर्म क्या है, जीवन क्या है, ईश्वर क्या है, और कर्म क्या है, कर्म की महत्ता क्या है, यह सभी विचार आपके मन में आएंगे और स्थायित्व को भी प्राप्त होंगे अर्थात आपके स्वभाव में परिवर्तन भी ले आएंगे ।

द्वितीय भाव में लग्नेश बुध और पंचमेश शुक्र का युत होना और फिर गुरु से दृष्ट होना एक अन्य अर्थ भी रखता है

- जातक में संत बनने की योग्यता होती है
- जातक श्रेष्ठ वक्ता हो सकता है, जातक के द्वारा किया गया मंत्र उच्चारण समाज को मंत्रमुग्ध कर देता है।

अष्टमेश शनि का पंचम स्थान में केतु से युत होना यह भी दर्शाता है कि आप में तांत्रिक पूजा पद्धति के प्रति रूझान होगा ।

**** ईश्वर आपको समस्त सुख ऐश्वर्य एवं सदबुद्धि प्रदान करें ****

"**********"

।। ॐ भूर् भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

"**********"

This Kundli is created by Mr. Manoj Kumar Pandey, to stay connected with us, follow us on all social media by clicking on the links given below.



Follow us on :-

Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC-eEGE5mzO1rhD-EDS1rwwQ

Facebook Group:
https://www.facebook.com/groups/404532170730330

Facebook page: https://www.facebook.com/jyotishandresearch

THANK YOU !!